अंतिम तीन दशक के हिंदी नाटक

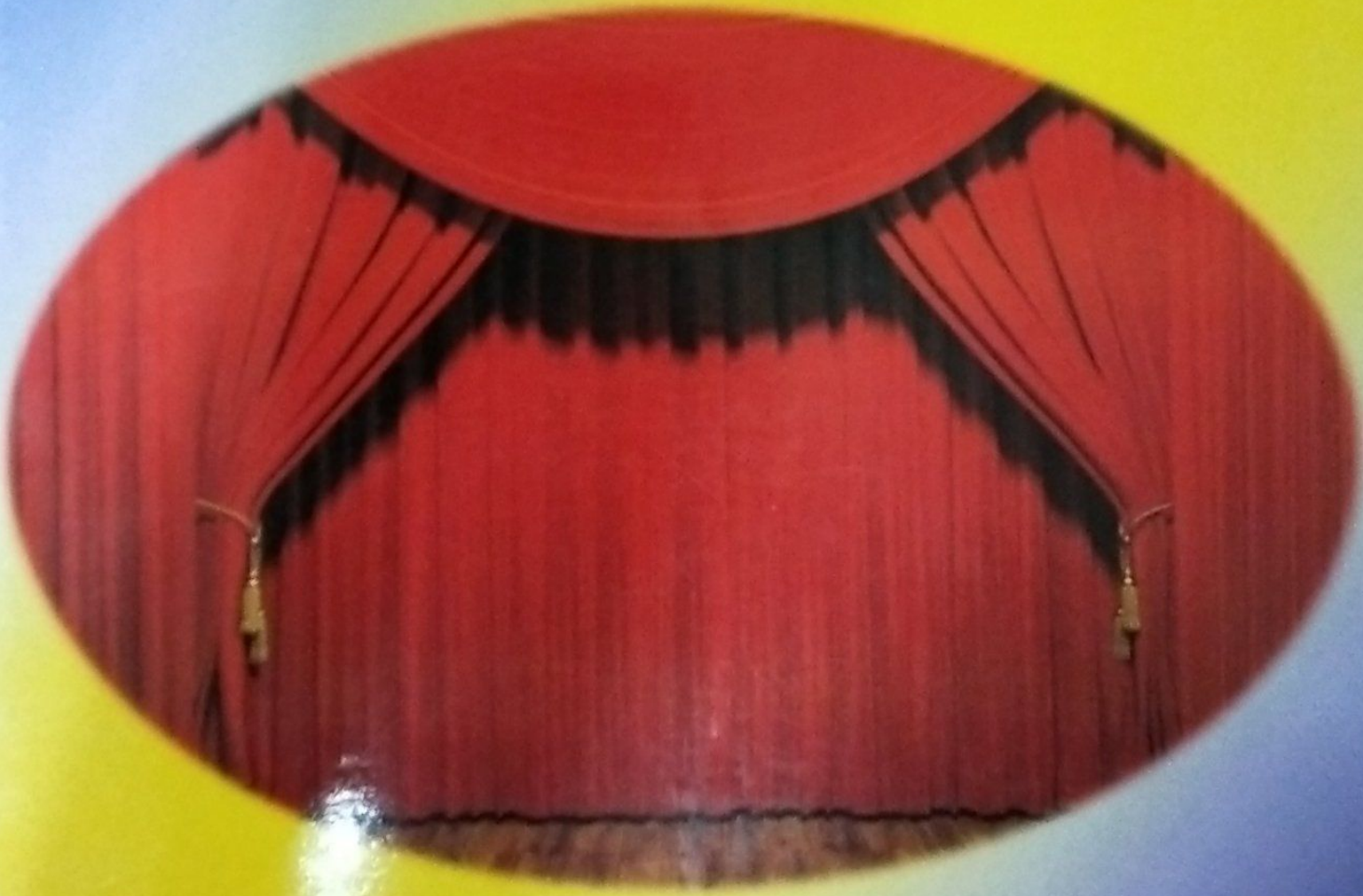

संपादक

डॉ. हर्षलता शाह

डॉ. सरोज सिंह

BOOK DETAILS

Book Name	:	अंतिम तीन दशक के हिंदी नाटक
Editors	:	डॉ. हर्षलता शाह
		डॉ. सरोज सिंह
Edition	:	2017
Pages	:	173
Book Size	:	Crown
Sheet	:	70 GSM Maplitho
Price	:	160/-
Printed by	:	Today Graphics 192 Bells Road Chepauk Chennai-5
Publisher	:	Today Publis 192 Bells Road Chepauk Chennai-5
ISBN	:	978-93-81992-24-1

8. स्वदेश दीपक के नाटक 'कोर्टमार्शल' में क्रूरता और करुणा की सघनता का चित्र
- डॉ.जैनब बी. 37

9. 'सफेद कौए काले हंस' नाटक में जीवन की यथार्थता का प्रतिपादन
- डॉ.बीना कुमारी नायर 41

10. कुसुम कुमार कृत "दिल्ली ऊँचा सुनती है" नाटक का विश्लेषण
- डॉ. जे. सैंथामरै 44

11. "एक और अजनबी" नाटक में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंधित समस्याएँ
-डॉ. ए. सफर्रम्मा 48

12. श्री गिरीश बख्शी के नाटक 'एक दायित्व और भी' पर एक दृष्टि
- डॉ.आशा चतुर्वेदी 51

13. असंगत नाटकों में मनोविज्ञान (मुद्राराक्षस के संदर्भ में)
- डॉ. एन.गुरुमूर्ति 56

14. आधुनिक नाटकों में राजनैतिक 'मूल्य विघटन'
-डॉ. अनुपमा के. 60

15. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के नाटक 'लड़ाई' में सामाजिक विड़ंबना
- डॉ.बी. कामकोटी 64

16. 'बिन्दो का बेटा' में अन्नपूर्णा का स्वरूप
- डॉ. के. आनंदी 67

'सफेद कौए काले हंस' नाटक में जीवन की यथार्थता का प्रतिपादन

-डॉ. बीना नायर

'सफेद कौए काले हंस' शंकर पुणतांबेकर द्वारा रचित अद्वितीय नाटक है। यह एक व्यंग्य नाटक है। शंकर पुणतांबेकर ने व्यंग्य के लिए नाटक को माध्यम बनाया है। व्यंग्यकार समाज की पीड़ा को आत्मसात करके व्यंग्य की रचना करता है। उसकी पीड़ा में वैयक्तिकता नहीं सार्वजनिकता होती है। उसका आक्रोश सारे समाज का आक्रोश होता है। प्रतिरोध और प्रतिहिंसा जगाना उसका काम नहीं है। यहीं व्यंग्य की वैचारिकता है।

इस नाटक में एक नाटककार के संघर्ष की कथा है, जो जीवन के स्तर मूल्यों के लिए संघर्ष करता है और रचना के स्तर पर भी। नाटक में उसके जीवन और कृतित्व के कुछ क्षणचित्र अंकित हैं, जिन्हें रिहर्सल के माध्यम से चित्रित किया गया है। इस नाटक में व्यक्ति, समाज और व्यवहार जगत से संबद्ध कई मार्मिक समस्याओं की चर्चा की गई है। पदों, सम्मानों और पुरस्कारों का खोखलापन, शासकों की खुशामद प्रियता, सत्य की आवाज बंद करने के लिए कदम उठाना, भ्रष्टाचार और घोटाले, स्वतंत्रता समता और धर्म-निरपेक्ष जैसे आदर्शों का मनमाना दुरुपयोग है जिसे इस नाटक में उभारा गया है। इन समस्याओं में से कुछ समस्याओं को नाटक के पात्रों के द्वारा प्रस्तुत कर रही हूँ।

अहं का विस्फोट इस साज में ज्यादातर पुरुष अहं से आक्रांत होकर अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए झूठी शान प्रदर्शित कर रहे हैं। इस नाटक का मुख्य पात्र धूमकेतु से जब पत्रकार साक्षात्कार लेता है तब धूमकेतु कहता है- "आदमी जब दो सीढ़ियाँ भी ऊपर चढ़ जाता है न, तो वह अहं में जीने लगता है, हाँ अहं में। इस अहं में वह आम आदमी से अलग जीने लगता है और इसे ही वह अपनी सार्थकता मानने लगता है। विडम्बना तो यह है कि जिन्दगी की विडम्बनाओं को दर्शाने वाला साहित्यकार भी इससे छूटा नहीं हैं।"

चेहरे पर चेहरा लगाना यानी डबल रोल की समस्या आजकल समाज में हर एक व्यक्ति अपना काम सफल करने के लिए कितने भी रोल करने के लिए तैयार रहता है। इस नाटक में जब डबल रोल की समस्या आती है तो धूमकेतु का कहना है- "यत्र-तत्र डबल रोल ही तो चल रहा है दुर्योधन का भी युधिष्ठिर का भी, कंस का भी, कृष्ण का भी, कीचक का भी, अर्जुन का भी, शोषक